सूरह — एक कहानी

सूरह अन-निसा

औरतें

पूरा सफ़र — हुक़ूक़ की सूरह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 4 • 176 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वत्तक़ुल्-लाहल्-लज़ी तसा-अलून बिही वल्-अर्हामि
1. और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से माँगते हो, और रिश्तों (रहमों) का लिहाज़ करो।

व 'आशिरूहुन्न बिल्-म'अ्रूफ़
19. और उन के साथ भलाई से ज़िंदगी गुज़ारो।

इन्नल्-लाह ला यज़्लिमु मिस्क़ाल ज़र्रह
40. बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करते।

इन्नल्-लाह यअ्मुरुकुम अन तुअद्दुल्-अमानाति इला अह्लिहा
58. बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं कि अमानतें उनके हक़दारों को लौटा दो।

अ फ़-ला यतदब्बरूनल्-क़ुरआन
82. तो क्या वो क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते?

कूनू क़व्वामीन बिल्-क़िस्ति शुहदा-अ लिल्लाहि व लौ 'अला अन्फ़ुसिकुम
135. इंसाफ़ पर मज़बूती से क़ायम रहो, अल्लाह के लिए गवाह बनो, चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ हो।

एक ही जान से

बेटा, ये **हुक़ूक़** की सूरह है — औरतों के हुक़ूक़, यतीमों के, कमज़ोरों के, रिश्तेदारों के, पड़ोसियों के, मुआशरे के। और ये आपको ये याद दिलाते हुए खुलती है कि हर इंसान कहाँ से आया:

'**या अय्युहन्-नासुत्-तक़ू रब्बकुमुल्-लज़ी ख़लक़कुम मिन नफ़्सिंव्-वाहिदतिंव्** — **ऐ लोगो, अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक ही जान से बनाया** — **व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्स मिन्हुमा रिजालन कसीरंव्-व निसा** — और उसी से उसका जोड़ा बनाया, और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं।'

'**वत्तक़ुल्-लाहल्-लज़ी तसा-अलून बिही वल्-अर्हामि** — **और अल्लाह से डरो**

जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से माँगते हो, और रहमों (रिश्तों) का लिहाज़ करो — **इन्नल्-लाह काना 'अलैकुम रक़ीबा** — बेशक, अल्लाह तुम पर निगराँ है।'

बेटा, ख़िताब ग़ौर कीजिए: '**या अय्युहन्-नास**' — **ऐ लोगो।** 'ऐ ईमान वालो' नहीं। **ये सूरह पूरी इंसानी नस्ल से बात करते हुए शुरू होती है, और उन्हें ये बताते हुए शुरू होती है कि वो एक ही ख़ानदान हैं।**

और ग़ौर कीजिए अल्लाह के डर के साथ क्या जोड़ा गया: '**वल्-अर्हाम**' — **रहम**, यानी रिश्तेदारी के बंधन। बेटा, नबी ﷺ ने हमें बताया कि रहम का रिश्ता अर्श से जुड़ा हुआ है, और जो उसे जोड़े अल्लाह उस से ता'ल्लुक़ रखते हैं, और जो उसे काटे अल्लाह उसे काट देते हैं।

फिर सूरह फ़ौरन यतीमों की तरफ़ मुड़ती है — '**व आतुल्-यतामा अम्वालहुम व ला ततबद्दलुल्-ख़बीस बित्-तय्यिब** — **यतीमों को उनके माल दे दो और अच्छे के बदले बुरा मत लो** — **व ला तअ्कुलू अम्वालहुम इला अम्वालिकुम इन्नहू काना हूबन कबीरा** — और उनके माल अपने मालों में मिला कर मत खाओ; बेशक ये **बड़ा गुनाह** है।'

बेटा, **इस सूरह की सब से पहली अमली हिदायत बे-बस लोगों के माल के बारे में है। ये आपको बताता है कि ये दीन किस चीज़ को पहले रखता है।**

'**इन्नल्-लज़ीन यअ्कुलून अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन इन्नमा यअ्कुलून फ़ी बुतूनिहिम नारा** — बेशक, जो ज़ुल्म से यतीमों का माल खाते हैं **वो अपने पेटों में आग ही भर रहे हैं।**'

और फिर निकाह और महर के अहकाम — और ये जुमला ग़ौर कीजिए, बेटा: '**व आतुन्-निसा-अ सदुक़ातिहिन्न निह्लह** — **और औरतों को उनके महर ख़ुशी से (एक तोहफ़े के तौर पर) दे दो।' एक क़ीमत के तौर पर नहीं, एक सौदे के तौर पर नहीं — एक तोहफ़ा जो ख़ुशी से दिया जाए।**

हिस्से

बेटा, इस सूरह में विरासत का तफ़्सीली क़ानून है — और आपको समझना चाहिए

कि क़ुरआन ने इसे लोगों पर छोड़ने के बजाए ख़ुद क्यों लिख दिया।

क्योंकि उस मुआशरे में, और उस के बाद बहुत से मुआशरों में, ताक़तवर सब कुछ ले लेते थे और कमज़ोरों को कुछ न मिलता था। औरतों और बच्चों को बिल्कुल कुछ विरासत में न मिलता; सिर्फ़ वो हिस्सा पाते थे जो लड़ और दिफ़ा' कर सकते थे।

और क़ुरआन ने हिस्से मतन में, गिनती में तय कर दिए — **ताकि उन्हें बातों से उड़ाया न जा सके।**

'**लिर्-रिजालि नसीबुम्-मिम्मा तरकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबून — मर्दों के लिए उस में से हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ें — व लिन्-निसा-इ नसीबुम्-मिम्मा तरकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबून — और औरतों के लिए भी उस में से हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ें — मिम्मा क़ल्ल मिन्हु औ कसुर — चाहे वो कम हो या ज़्यादा — नसीबम्-मफ़्रूज़ा — एक मुक़र्रर (लाज़मी) हिस्सा।**'

बेटा, '**नसीबम्-मफ़्रूज़ा**' — एक हिस्सा जो **लाज़िम** किया गया, मुक़र्रर, इख़्तियारी नहीं। **किसी की ख़ुश-दिली की ज़रूरत नहीं।**

और विरासत के अहकाम के बीच में एक ख़ूबसूरत हिदायत रखी गई है: '**व इज़ा हज़रल्-क़िस्मत उलुल्-क़ुर्बा वल्-यतामा वल्-मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम मिन्हु व क़ूलू लहुम क़ौलम्-म'ऊफ़ा — और जब तक़सीम के वक़्त (दूसरे) रिश्तेदार, यतीम और मोहताज मौजूद हों, तो उन्हें भी उस में से कुछ दो, और उन से भलाई की बात कहो।**'

बेटा, इसे देखिए। **वो लोग जिनका विरासत में कोई क़ानूनी हक़ नहीं मगर वो वहीं खड़े उसे बँटते देख रहे हैं — उन्हें कुछ दीजिए, और उन से अच्छी बात कीजिए। ये उस से बढ़ कर लिहाज़ है जितना ख़ुद क़ानून माँगता है।**

'**वल्-यख़्शल्-लज़ीन लौ तरकू मिन ख़ल्फ़िहिम ज़ुर्रिय्यतन ज़ि'आफ़न ख़ाफ़ू 'अलैहिम** — और वो लोग डरें जो, अगर अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ते, तो उन के लिए डरते।'

बेटा, ये एक वारिस के ज़मीर से एक ज़ोर-दार अपील है: **अगर आप न होते तो आप**

चाहते कि आपके बच्चों के साथ कैसा सुलूक हो?

उन के साथ भलाई से रहो

फिर सूरह एक ऐसे मुआशरे में औरतों के साथ सुलूक को मुख़ातिब करती है जहाँ उन्हें विरासत की जायदाद समझा जाता था, बेटा:

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू ला यहिल्लु लकुम अन तरिसुन्-निसा-अ कर्हा — ऐ ईमान वालो, तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम औरतों को ज़बरदस्ती विरासत में ले लो।'

बेटा, **अकेले इसी ने एक ऐसी रस्म ख़त्म कर दी जिस में एक बेवा जायदाद के साथ आगे सौंप दी जाती थी।**

'व 'आशिरूहुन्न बिल्-म'ऊफ़ — और उन के साथ भलाई से ज़िंदगी गुज़ारो — फ़-इन करिह्तुमूहुन्न फ़-'असा अन तक्रहू शै-अंव्-व यज्'अलल्-लाहु फ़ीहि ख़ैरन कसीरा — और अगर वो तुम्हें ना-पसंद हों — तो शायद तुम एक चीज़ को ना-पसंद करो और अल्लाह उस में बहुत सी भलाई रख दें।'

बेटा, इस आयत के साथ बैठिए, क्योंकि शादी के लिए दी गई ये सब से अमली हिदायतों में से एक है।

"आशिरूहुन्न बिल्-म'ऊफ़' — 'मु'आशरह' रोज़ाना की सुह्बत का लफ़्ज़ है, किसी के साथ साथ रहने का। और 'बिल्-म'ऊफ़' का मतलब है उस तरीक़े से जिसे अच्छा और शरीफ़ाना पहचाना जाता है। तो: **घर में आपका रोज़मर्रा का आम बर्ताव अच्छा होना चाहिए।**

और फिर वो ग़ैर-मामूली हिस्सा: **और अगर वो तुम्हें ना-पसंद हों। अल्लाह ये नहीं कहते कि 'तुम्हें मोहब्बत महसूस करनी ही होगी'। वो मान लेते हैं कि एक मर्द को, किसी वक़्त, ना-पसंदीदगी महसूस हो सकती है। और हुक्म फिर भी क़ायम है: फिर भी भलाई से रहो।**

और फिर वजह: **शायद तुम किसी चीज़ को ना-पसंद करो और अल्लाह ने उस में**

बहुत सी भलाई रख दी हो। बेटा, **कितने लोग किसी मुश्किल से चल दिए और बाद में पता चला कि वही मुश्किल उस चीज़ का दरवाज़ा थी जिसकी उन्हें ज़रूरत थी?**

और तलाक़ पर भी सूरह वही वक़ार क़ायम रखती है: '**व इन अरत्तुमुस्-तिब्दाल ज़ौजिम्-मकान ज़ौजिंव्-व आतैतुम इह्दाहुन्न क़िन्तारन फ़-ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शै-आ** — और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी लेना चाहो, और तुमने उन में से किसी को **ढेर सारा** माल दिया हो, **तो उस में से कुछ वापस मत लो।**'

बेटा, **जुदाई के लम्हे में भी — कुछ वापस मत लीजिए।**

और फिर, बेटा, क़ुरआन में हुक़ूक़ की सब से मुकम्मल फ़ेहरिस्तों में से एक:

'**वअ्बुदुल्-लाह व ला तुश्रिकू बिही शै-अंव्** — **और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक मत करो** — **व बिल्-वालिदैनि इह्सानंव्** — **और माँ-बाप के साथ हुस्न-ए-सुलूक** — **व बि-ज़िल्-क़ुर्बा** — **और रिश्तेदारों के साथ** — **वल्-यतामा** — **और यतीमों के साथ** — **वल्-मसाकीन** — **और मोहताजों के साथ** — **वल्-जारि ज़िल्-क़ुर्बा** — **और उस पड़ोसी के साथ जो रिश्तेदार हो** — **वल्-जारिल्-जुनुब** — **और उस पड़ोसी के साथ जो अजनबी हो** — **वस्-साहिबि बिल्-जम्ब** — **और उस साथी के साथ जो बग़ल में हो** — **वब्निस्-सबील** — **और मुसाफ़िर के साथ** — **व मा मलकत ऐमानुकुम** — **और उन के साथ जो तुम्हारे ज़ेर-ए-इख़्तियार हैं।**'

'**इन्नल्-लाह ला युहिब्बु मन काना मुख़्तालन फ़ख़ूरा** — बेशक, अल्लाह उसे पसंद नहीं करते जो इतराने वाला और फ़ख़्र करने वाला हो।'

बेटा, गिनिए ये कितने दर्जे हैं — तौहीद के बाद नौ। और ग़ौर कीजिए कौन कौन शामिल है: **वो पड़ोसी जो रिश्तेदार है, वो पड़ोसी जो अजनबी है, और 'अस्-साहिबु बिल्-जम्ब' — बग़ल वाला साथी**, जिसे उलमा ने हर उस शख़्स के तौर पर समझाया जो इत्तेफ़ाक़न आपके बग़ल में हो: **एक साथी कारकुन, एक हम-सफ़र, वो शख़्स जो आपके साथ बैठा है।**

बेटा, और ग़ौर कीजिए फ़ेहरिस्त कैसे ख़त्म होती है: **ग़ुरूर के ख़िलाफ़ एक तंबीह से। क्योंकि ग़ुरूर ही वो चीज़ है जो एक शख़्स से इन तमाम हुक़ूक़ में कोताही करवाता**

है।

अमानतें लौटा दो

और फिर, बेटा, एक आयत जिसे उलमा ने हुकूमत और हर पेशे की बुनियादों में से एक कहा:

'**इन्नल्-लाह यअ्मुरुकुम अन तुअद्दुल्-अमानाति इला अह्लिहा — बेशक, अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं कि अमानतें उनके हक़दारों को लौटा दो — व इज़ा हकम्तुम बैनन्-नासि अन तह्कुमू बिल्-'अद्ल — और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो इंसाफ़ से फ़ैसला करो — इन्नल्-लाह नि'इम्मा य'इज़ुकुम बिह** — क्या ही अच्छी है वो नसीहत जो वो तुम्हें करते हैं।'

बेटा, '**अल-अमानात**' — अमानतें। और उलमा ने इसे सब से वसी' मानी दिए: **हर वो ज़िम्मेदारी जो आपके हाथ में रखी गई। एक ओहदा जो आपको दिया गया, किसी का पैसा जो आपके पास है, एक राज़ जो आपको बताया गया, एक इल्म जो आपको सिखाया गया, एक बच्चा जो आपके घर में पल रहा है, एक नौकरी जिस के लिए आपको रखा गया।**

और '**इला अह्लिहा**' — उन्हें उन्हें दो जो उन के **हक़दार** हैं। बेटा, **यही आयत इस उसूल की बुनियाद है कि ओहदे अहल और मुस्तहिक़ लोगों को मिलने चाहिए, रिश्तेदारों और दोस्तों को नहीं।**

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू अती'उल्-लाह व अती'उर्-रसूल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम — ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और अपने में से इख़्तियार वालों की — फ़-इन तनाज़अ्तुम फ़ी शै-इन फ़-रुद्दूहु इलल्-लाहि वर्-रसूल — और अगर तुम किसी चीज़ में इख़्तिलाफ़ करो तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटा दो — इन कुन्तुम तुअ्मिनून बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िर** — अगर तुम अल्लाह और आख़िरी दिन पर ईमान रखते हो — **ज़ालिक ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला** — यही बेहतर और अंजाम में अच्छा है।'

बेटा, अरबी की एक बारीकी ग़ौर कीजिए जिस पर उलमा मुद्दत से तवज्जोह दिलाते

हैं। **कहा गया 'अल्लाह की इताअत करो' और 'रसूल की इताअत करो' — फ़े'ल दोहराया गया। मगर इख़्तियार वालों के लिए फ़े'ल नहीं दोहराया गया; उन्हें रसूल की इताअत के साथ जोड़ दिया गया।**

मतलब: **अल्लाह और उसके रसूल की इताअत मुतलक़ है; इंसानी इख़्तियार की इताअत उस से निकली हुई और मशरूत है। वो सिर्फ़ अल्लाह की इताअत के अंदर ही क़ायम रहती है।**

और झगड़ों का तरीक़ा बता दिया गया: **उसे किताब और सुन्नत की तरफ़ वापस ले जाओ।** रस्म-ओ-रिवाज की तरफ़ नहीं, उस की तरफ़ नहीं जो सब फ़र्ज़ कर लेते हैं, और उस की तरफ़ नहीं जो सब से ऊँची आवाज़ में बोले।

और फिर, बेटा, एक बहुत सख़्त आयत: '**फ़-ला व रब्बिक ला युअ्मिनून हत्ता युहक्किमूक फ़ीमा शजर बैनहुम — तो नहीं, तेरे रब की क़सम, वो मोमिन न होंगे जब तक वो अपने झगड़ों में तुझे फ़ैसला करने वाला न बनाएँ — सुम्म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम हरजम्-मिम्मा क़ज़ैत व युसल्लिमू तस्लीमा — और फिर तेरे फ़ैसले पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएँ, और पूरी तरह सुपुर्द हो जाएँ।**'

बेटा, तीन दर्जे माँगे गए। **एक: उनके फ़ैसले को क़ुबूल करो। दो: उसके बारे में अंदर कोई रंजिश महसूस न करो। तीन: मुकम्मल तौर पर सुपुर्द हो जाओ।**

बेटा, दरमियान वाला हिस्सा मुश्किल है। **एक शख़्स ज़ाहिरी तौर पर दीन का कोई हुक्म मान सकता है और अपने सीने में ए'तिराज़ उठाए फिर सकता है** — 'मगर ये तो ना-इंसाफ़ी है', 'ये हमारे ज़माने के मुनासिब नहीं'। **और अल्लाह अपनी क़सम खा कर कहते हैं कि ईमान तब तक मुकम्मल नहीं जब तक वो अंदरूनी तंगी भी न चली जाए।**

क्या वो ग़ौर नहीं करते?

फिर सूरह मदीना के मुनाफ़िक़ों पर बात करती है, और उन पर जो लड़ने निकले और जो पीछे रह गए, और रास्ते में कुछ भारी आयतें देती है।

'**ऐनमा तकूनू युद्रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम फ़ी बुरूजिम्-मुशय्यदह — तुम जहाँ**

कहीं भी हो, मौत तुम्हें पा लेगी, चाहे तुम मज़बूत बुर्जों में हो।'

बेटा, **ये हर उस क़िले का जवाब है जो इंसानों ने कभी बनाया।**

'मा असाबक मिन हसनतिन फ़-मिनल्-लाह — जो भलाई तुम्हें पहुँचे वो अल्लाह की तरफ़ से है — व मा असाबक मिन सय्यि-अतिन फ़-मिन नफ़्सिक — और जो बुराई तुम्हें पहुँचे वो ख़ुद तुम्हारी तरफ़ से है।'

बेटा, **एक मोमिन का सही अंदाज़ यही है: हर भलाई अल्लाह की तरफ़ मंसूब करो, और हर नुक़सान का सबब पहले अपने ही अमल में ढूँढो।**

और फिर, बेटा, ख़ुद क़ुरआन के बारे में एक हिदायत:

'अ फ़-ला यतदब्बरूनल्-क़ुरआन व लौ काना मिन 'इन्दि ग़ैरिल्-लाहि ल-वजदू फ़ीहिख़्-तिलाफ़न कसीरा — तो क्या वो क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते? अगर ये अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो वो इस में बहुत सा इख़्तिलाफ़ पाते।'

बेटा, लफ़्ज़ '**तदब्बुर**' है — 'दुबुर' से, किसी चीज़ का अंजाम या नतीजा। तो **तदब्बुर का मतलब है किसी चीज़ को उसके नतायज तक देखना; उसे उलट-पलट कर देखना, अल्फ़ाज़ के पीछे तक पहुँचना।**

बेटा, इसी लिए **क़ुरआन को तेज़ी से, एक ऐसी ज़ुबान में जो आप समझते नहीं, बिना रुक कर सोचे पढ़ लेना वो नहीं जो ये आप से माँगता है। ये तदब्बुर माँगता है।**

और दी गई दलील ग़ौर कीजिए: **एक किताब जो तेईस साल में टुकड़ों में पहुँचाई गई, बेहद मुख़्तलिफ़ हालात में — ग़ुर्बत में और इक़्तिदार में, शिकस्त में और फ़तह में, मक्का में और मदीना में — एक ऐसे आदमी के ज़रिए जो पढ़ नहीं सकता था। और ये अपने आप को काटती नहीं।**

और फिर बात करने के बारे में दो आयतें, बेटा। पहली ख़बर फैलाने के बारे में: '**व इज़ा जा-अहुम अम्रुम्-मिनल्-अम्नि अविल्-ख़ौफ़ि अज़ा'ऊ बिह** — और जब उनके पास अमन या ख़ौफ़ की कोई ख़बर आती है, **वो उसे फैला देते हैं** — **व लौ रद्दूहु इलर्-रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम ल-'अलिमहुल्-लज़ीन यस्तम्बितूनहू**

मिन्हुम — मगर अगर वो उसे रसूल या अपने इख़्तियार वालों की तरफ़ लौटा देते, तो वो लोग जान लेते जो उस से सही नतीजा निकाल सकते हैं।'

बेटा, ये आयत जंग के ज़माने की अफ़्वाहों के बारे में उतरी। और **ये ठीक वो ज़ब्त है जो हमारे आगे भेजे गए मैसेजेस में ग़ायब है: फैलाने से पहले, जानने वालों से तस्दीक़ कर लीजिए।**

और दूसरी: '**मंय्यश्फ़अ् शफ़ा'अतन हसनतंय्यकुल्-लहू नसीबुम्-मिन्हा — जो किसी अच्छे काम में सिफ़ारिश करे उसे उस में से हिस्सा मिलेगा — व मंय्यश्फ़अ् शफ़ा'अतन सय्यि-अतंय्यकुल्-लहू किफ़्लुम्-मिन्हा** — और जो किसी बुरे काम में सिफ़ारिश करे उसे उसके बोझ में से हिस्सा मिलेगा।'

बेटा, **जब आप किसी के लिए एक लफ़्ज़ कहते हैं — एक नौकरी, एक रिश्ता, एक मदद — तो उस के बाद होने वाली भलाई का एक हिस्सा आपको मिलता है। और यही उसूल उल्टा भी चलता है।**

'**व इज़ा हुय्यीतुम बि-तहिय्यतिन फ़-हय्यू बि-अह्सन मिन्हा औ रुद्दूहा — और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो उस से बेहतर से जवाब दो, या कम से कम वही लौटा दो।**'

बेटा, **सलाम का भी एक क़ानून है: उसे लौटाओ, या उस से बेहतर करो।** अगर कोई 'अस्सलामु 'अलैकुम' कहे, तो आप कहिए 'व 'अलैकुमुस्-सलाम व रहमतुल्लाह' — आप कुछ बढ़ाते हैं।

इंसाफ़ पर मज़बूती से खड़े रहो

और अब, बेटा, वो आयत जो इस सूरह की चोटी है, और किसी भी किताब में इंसाफ़ के बारे में सब से अज़ीम बयानात में से एक:

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू कूनू क़व्वामीन बिल्-क़िस्ति शुहदा-अ लिल्लाह — ऐ ईमान वालो, इंसाफ़ पर मज़बूती से क़ायम रहो, अल्लाह के लिए गवाह बनो — व लौ 'अला अन्फ़ुसिकुम अविल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबीन — चाहे वो ख़ुद तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ हो, या माँ-बाप के, या क़रीबी रिश्तेदारों के।**'

'इंय्यकुन ग़निय्यन औ फ़क़ीरन फ़ल्लाहु औला बिहिमा — चाहे वो अमीर हो या ग़रीब, अल्लाह दोनों के ज़्यादा हक़दार हैं — फ़-ला तत्तबि'उल्-हवा अन तअ्दिलू — तो अपनी ख़्वाहिश के पीछे मत चलो कि इंसाफ़ से हट जाओ।'

बेटा, देखिए क्या मुतालबा किया जा रहा है। **सची गवाही दो चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ हो। चाहे अपने ही माँ-बाप के ख़िलाफ़। चाहे अपने सब से क़रीबी ख़ानदान के ख़िलाफ़।**

और फिर वो दो सिम्तें जिन में इंसाफ़ आम तौर पर झुकता है, दोनों का नाम लिया गया और दोनों बंद की गईं: **अमीर आदमी की तरफ़-दारी मत कीजिए इस लिए कि उसके पास ताक़त है और आप उसकी ख़ुश-दिली चाहते हैं; और ग़रीब आदमी की तरफ़-दारी भी हमदर्दी में मत कीजिए।**

बेटा, ये दूसरी बात लोगों को हैरान करती है। **हम फ़र्ज़ कर लेते हैं कि कमज़ोर फ़रीक़ की तरफ़ झुकना रहम-दिली है। और आयत कहती है: नहीं। इंसाफ़ किसी भी सिम्त में नहीं झुकता। 'अल्लाह दोनों के ज़्यादा हक़दार हैं' — वो उनके हालात आप से बेहतर जानते हैं।**

'फ़-ला तत्तबि'उल्-हवा अन तअ्दिलू' — अपनी ख़्वाहिश के पीछे मत चलो, वरना तुम इंसाफ़ न कर सकोगे। बेटा, तरीक़ा यही है: **ना-इंसाफ़ी तक़रीबन हमेशा एक पसंदीदगी से शुरू होती है। हम एक ख़ास नतीजा चाहते हैं, और फिर उसके लिए वजहें ढूँढ लेते हैं।**

और ग़ौर कीजिए ये आयत सूरह अल-माइदह वाली आयत के बग़ल में कैसे बैठती है: **वहाँ, आप नफ़रत को अपना फ़ैसला मोड़ने नहीं दे सकते; यहाँ, आप मोहब्बत को नहीं दे सकते। इन दोनों के दरमियान, हर दरवाज़ा बंद हो गया।**

वो दरवाज़े जो खुले हैं

फिर सूरह वाज़ेह करती है कि अल्लाह क्या नहीं बख़्शते और क्या बख़्शते हैं: **'इन्नल्-लाह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्रक बिही व यग़्फ़िरु मा दून ज़ालिक लिमंय्यशा — बेशक, अल्लाह अपने साथ शिर्क को नहीं बख़्शते, मगर उस से कम जो है उसे**

जिसके लिए चाहें बख़्श देते हैं।'

बेटा, और याद रखिए: **ये उस शख़्स के बारे में है जो शिर्क ही पर मर जाए। जब तक एक शख़्स ज़िंदा है, किसी भी चीज़ से तौबह का दरवाज़ा खुला है** — जैसा ख़ुद ये सूरह कहीं और कहती है।

'व मंय्यअ्मल सू-अन औ यज़्लिम नफ़्सहू सुम्म यस्तग़्फ़िरिल्-लाह यजिदिल्-लाह ग़फ़ूरर्-रहीमा — और जो कोई बुराई करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे, तो वो अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम वाला पाएगा।'

बेटा, '**यजिदिल्-लाह**' — वो अल्लाह को बख़्शने वाला **पाएगा।** 'अल्लाह शायद बख़्श दें नहीं। **वो उन्हें ऐसा पाएगा।**

और फिर, बेटा, हर उस शख़्स के लिए एक आयत जो ऐसी जगह फँसा हो जहाँ वो अपना दीन न निभा सके:

'व मंय्युहाजिर फ़ी सबीलिल्-लाहि यजिद फ़िल्-अर्ज़ि मुराग़मन कसीरंव्-व स'अह — और जो अल्लाह की राह में हिजरत करे वो ज़मीन में बहुत सी (मुतबादिल) जगहें और कुशादगी पाएगा।'

बेटा, '**मुराग़मन कसीरंव्-व स'अह**' — बहुत सी पनाह की जगहें, और **कुशादगी। जो भी अल्लाह के लिए कुछ छोड़े वो पाएगा कि ज़मीन चौड़ी है।**

और फिर निजी गुफ़्तगुओं के बारे में एक हिस्सा, बेटा: '**ला ख़ैर फ़ी कसीरिम्-मिन नज्वाहुम — उनकी ज़्यादा तर सरगोशियों में कोई भलाई नहीं — इल्ला मन अमर बि-सदक़तिन औ म'ऊ़फ़िन औ इस्लाहिम्-बैनन्-नास — सिवाए उस के जो सदक़े का, या किसी भलाई का, या लोगों के दरमियान सुलह का हुक्म दे।'**

बेटा, हमारी निजी गुफ़्तगू की आम बे-कारी से तीन इस्तिस्ना: **किसी सदक़े का इंतेज़ाम करना, किसी भलाई की तरग़ीब देना, या दो लोगों के दरमियान ता'ल्लुक़ ठीक करना।**

बेटा, इसे अपनी आम गुफ़्तगू के सामने रखिए। **हम निजी तौर पर जो कहते हैं उसका कितना हिस्सा इन तीनों में आता है?**

और सूरह नमाज़ और उसके वक़्त के बारे में सब से वाज़ेह आयतों में से एक देती है: '**इन्नस्-सलात कानत 'अलल्-मुअ्मिनीन किताबम्-मौक़ूता — बेशक, नमाज़ मोमिनीन पर मुक़र्रर वक़्तों के साथ फ़र्ज़ की गई है।**'

बेटा, '**किताबम्-मौक़ूता**' — एक ऐसा फ़र्ज़ जिसके वक़्त मुक़र्रर हैं। **जब भी मौक़ा मिले तब नहीं। अपने वक़्त पर।**

दीन में कौन बेहतर है?

और अब, बेटा, सूरह अपने इख़्तिताम की तरफ़ एक ऐसी आयत के साथ बढ़ती है जो ये तय करती है कि एक अच्छा मुसलमान अस्ल में है क्या:

'**व मन अह्सनु दीनम्-मिम्मन अस्लम वज्हहू लिल्लाहि व हुव मुह्सिनुंव्-वत्तब'अ मिल्लत इब्राहीम हनीफ़ा — और दीन में उस से बेहतर कौन है जो अपना चेहरा अल्लाह के सुपुर्द कर दे जब कि वो नेकी करने वाला हो, और इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करे, हक़ की तरफ़ झुका हुआ? — वत्तख़ज़ल्-लाहु इब्राहीम ख़लीला — और अल्लाह ने इब्राहीम को गहरा दोस्त बनाया।**'

बेटा, तीन चीज़ें: **सुपुर्दगी, इह्सान — भलाई करना और काम अच्छे से करना — और ख़ालिस तौहीद के रास्ते की पैरवी। यही पूरी ता'रीफ़ है।**

और फिर: '**व लिल्लाहि मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व कानल्-लाहु बि-कुल्लि शै-इम्-मुहीता** — और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है, और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए हैं।'

फिर सूरह 'ईसा (अलैहि0) के बारे में वो बड़ी तस्हीह करती है, उन दोनों को दुरुस्त करते हुए जिन्होंने उनकी माँ पर तोहमत लगाई और जिन्होंने उन्हें उनके मुक़ाम से बढ़ा दिया: '**इन्नमल्-मसीहु 'ईसब्-नु मरयम रसूलुल्-लाहि व कलिमतुहू अल्क़ाहा इला मरयम व रूहुम्-मिन्ह** — मसीह, 'ईसा इब्न मरयम, **अल्लाह के रसूल** थे और उसका कलिमा जो उसने मरयम की तरफ़ डाला, और उस की तरफ़ से एक रूह।'

'**फ़-आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिह** — तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ

— **व ला तक़ूलू सलासह** — **और 'तीन' मत कहो** — **इन्तहू ख़ैरल्-लकुम** — **बाज़ आ जाओ; ये तुम्हारे लिए बेहतर है** — **इन्नमल्-लाहु इलाहुंव्-वाहिद** — अल्लाह तो बस **एक ही माबूद** है — **सुब्हानहू अंय्यकून लहू वलद** — वो इस से पाक है कि उसका कोई बेटा हो।'

'**लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकून 'अब्दल्-लिल्लाहि व लल्-मलाइकतुल्-मुक़र्रबून** — **मसीह कभी अल्लाह का बंदा होने से आर न करेंगे, और न ही क़रीबी फ़रिश्ते।**'

बेटा, वो लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: **वो बंदा होने से कभी आर न करेंगे। बंदगी मख़्लूक़ के सब से अज़ीम लोगों के लिए कम-तरी नहीं; ये उनका ए'ज़ाज़ है।**

और फिर सूरह उन के लिए वादा देती है जो थामे रहते हैं: '**फ़-अम्मल्-लज़ीन आमनू बिल्लाहि वअ्-तसमू बिही फ़-स-युद्ख़िलुहुम फ़ी रहमतिम्-मिन्हु व फ़ज़्लिंव्-व यह्दीहिम इलैहि सिरातम्-मुस्तक़ीमा** — तो जो अल्लाह पर ईमान लाए और **उसे मज़बूती से थाम लिया**, वो उन्हें अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेंगे और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते पर चलाएँगे।'

बेटा, और इस सूरह की आख़िरी आयत, हैरत-अंगेज़ तौर पर, फिर विरासत की तरफ़ लौटती है — उस आदमी के मामले की तरफ़ जो न माँ-बाप छोड़े न औलाद, और उसकी जायदाद एक भाई और एक बहन में कैसे तक़सीम होगी।

'**युबय्यिनुल्-लाहु लकुम अन तज़िल्लू** — **अल्लाह तुम्हारे लिए वाज़ेह करते हैं, कहीं तुम भटक न जाओ** — **वल्लाहु बि-कुल्लि शै-इन 'अलीम** — और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाले हैं।'

बेटा, सोचिए ये सूरह कैसे ख़त्म होती है। **ये शुरू हुई 'ऐ लोगो, अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक ही जान से बनाया' से — और ख़त्म होती है उन ठीक हिस्सों पर जो एक भाई और एक बहन का हक़ हैं।**

इंसानियत के आग़ाज़ से ले कर एक ही ख़ानदान की जायदाद के हिसाब तक। बेटा, यही इस दीन का दायरा है: **ये वुजूद की सब से बड़ी सचाई से शुरू होता है और उसे ठीक नीचे तक ले जाता है — कि किस को कौनसा हिस्सा मिलेगा, ताकि किसी पर**

ज़ुल्म न हो।

क्योंकि वो दीन जो ख़ुदा के बारे में ख़ूबसूरत बातें करे और कमज़ोर का हक़ न चुकाए, उसने अपना काम पूरा नहीं किया।

इस सूरह से क्या सीखा

1. ये 'ऐ लोगो' कह कर मुख़ातिब करती है और हम सब को याद दिलाती है कि हम एक ही जान से आए — और अल्लाह के डर के साथ रिश्तों का लिहाज़ जोड़ती है।

2. पहली अमली हिदायत यतीमों के माल के बारे में है — ये दीन बे-बस से शुरू करता है।

3. 'उन के साथ भलाई से रहो' — और अगर कोई चीज़ तुम्हें ना-पसंद हो, अल्लाह ने उस में बहुत सी भलाई रखी हो सकती है।

4. अमानतें उन्हें दो जो उनके हक़दार हैं, और इंसाफ़ से फ़ैसला करो — ओहदे अहल लोगों का हक़ हैं, रिश्तेदारों का नहीं।

5. ईमान तब तक मुकम्मल नहीं जब तक अल्लाह के फ़ैसले पर अंदर कोई तंगी बाक़ी हो।

6. सची गवाही दो चाहे अपने, अपने माँ-बाप, अपने रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ हो — और न अमीर के लिए झुको, न ग़रीब पर तरस खा कर।

7. ज़्यादा तर निजी गुफ़्तगू में कोई भलाई नहीं, सिवाए सदक़े, भलाई की तरग़ीब, या लोगों में सुलह के।

या अल्लाह, हमें उन में बना दीजिए जो इंसाफ़ पर मज़बूती से खड़े रहते हैं, अपनी अमानतें निभाते हैं, और आपको मज़बूती से थामे रहते हैं। आमीन।